ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

राम का आदर्श चरित्र प्रासंगिकता और महत्व

DR. SHAILJA RANI AGNIHOTRI

ASSOCIATE PROFESSOR, SANSKRIT, S.D. GOVT. COLLEGE, BEAWAR, INDIA

सार

हर भारतीय भगवान राम को एक आदर्श आराध्य के रूप में देखता है, जिन्होंने जीवन भर अपनी दिव्य भगवदीय शक्तियों का उपयोग नहीं किया और एक सामान्य मनुष्य की तरह जीवन व्यतीत किया। राम जी द्वारा स्थापित आदर्श आज के समय में बहुत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। हमें अच्छे बेटे बनना है, तो राम जरूरी है।

परिचय

हनुमानजी ने श्रीराम जी से प्रभु मुधिका लेकर सीता की खोज के लिए प्रस्थान किया था। परिवार में कि तना ही विवाद हो लेकि न घर परिवार नहीं छोड़ा जाता है। रावण व्याभिचारातम्क गुण था। महिलाएं संस्कारों पर कम दिखावे पर ज्यादा ध्यान देती है, जबकि संस्कारों के साथ ही संस्कृति की सुरक्षा होती है। संस्कारों से ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। समाज में हम आग लगाने का नहीं आग बुझाने का प्रयास करें। हनुमान जी की पूंछ में आग लगाने से लंका पूरी जलकर खाक हो गई। लेकि न विभीषण का घर में आग नहीं लगाई थी क्योंकि विभीषण के घर के बाहर श्रीराम लिखा हुआ था, जो श्रीराम का भक्त होता है उसका संकट में भी कु छ नहीं बिगड़ता है। गो माता की सेवा करे तो मनुष्य बलवान बनता है। गो माता की सेवा कार्य करेंगे तो जीवन का कल्याण होगा। उत्तम स्वामी महाराज ने श्रीराम कथा में योगदान देने वाले सभी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष कार्यकर्ताओं का व्यास पीठ से सम्मान किया। कथा में भरत, शत्रुघ्न, उर्मिला, लक्ष्मण, जटायु, अंगद, सुग्रीव, बाली, जामवंत, अशोक वाटिका, हनुमान की गतिविधियां, राम-रावण संवाद, समुध तट पर वानरों का एकत्रीकरण और राम सेतु निर्माण आदि वानर प्रजाति का रामायण में महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। सत्यधर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प भी दिलाया। [1,2,3]

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के सत्रह गुण बताए गए हैं, जो लोगों में नेतृत्व क्षमता बढ़ाने व किसी भी क्षेत्र में अगुवाई करने के अहम सूत्र हैं। वाल्मीकि जी ने नारद जी से प्रश्न किया कि सम्प्रति इस लोक में ऐसा कौन मनुष्य है जो गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़व्रत होने के साथ साथ सदाचार से युक्त हो। जो सब प्राणियों का हितकारक हो, साथ ही विद्वान, समर्थ और प्रियदर्शन हो।

कोऽन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥१-१-२
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कस्समर्थश्च कैश्चैकप्रियदर्शनः॥१-१-३
आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥१-१-४

उत्तर में नारद जी कहते हैं कि इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न श्री राम में ये सभी गुण हैं।[29]

श्रीराम के सोलह गुण, जो आदर्श पुरुष में होने चाहिए-

1. गुणवान्
2. वीर्यवान् (वीर)
3. धर्मज्ञ (धर्म को जानने वाला)
4. कृतज्ञ (दूसरों द्वारा किये हुए अच्छे कार्य को न भूलने वाला)
5. सत्यवाक्य (सत्य बोलने वाला)
6. दृढव्रत (दृढ व्रती)
7. चरित्रवान्
8. सर्वभूतहितः (सभी प्राणियों के हित करने वाला)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

9. विद्वान्
10. समर्थ
11. सदैक प्रियदर्शन (सदा प्रियदर्शी)
12. आत्मवान् (धैर्यवान)
13. जितक्रोध (जिसने क्रोध को जीत लिया हो)
14. द्युतिमान् (कान्तियुक्त)
15. अनसूयक (ईर्ष्या को दूर रखने वाला)
16. बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे (जिसके रुष्ट होने पर युद्ध में देवता भी भयभीत हो जाते हैं)

यह बात उस समय की है जब मनु और सतरूपा परमब्रह्म की तपस्या कर रहे थे। कई वर्ष तपस्या करने के बाद शंकरजी ने स्वयं पार्वती से कहा कि ब्रह्मा, विष्णु और मैं कई बार मनु सतरूपा के पास वर देने के लिये आये ("बिधि हरि हर तप देखि अपारा, मनु समीप आये बहु बारा") और कहा कि जो वर तुम माँगना चाहते हो माँग लो; पर मनु सतरूपा को तो पुत्र रूप में स्वयं परमब्रह्म को ही माँगना था, फिर ये कैसे उनसे यानी शंकर, ब्रह्मा और विष्णु से वर माँगते? हमारे प्रभु राम तो सर्वज्ञ हैं। वे भक्त के हृदय की अभिलाषा को स्वत: ही जान लेते हैं। जब २३ हजार वर्ष और बीत गये तो प्रभु राम के द्वारा आकाशवाणी होती है-

प्रभु सर्वग्य दास निज जानी, गति अनन्य तापस नृप रानी।
माँगु माँगु बरु भइ नभ बानी, परम गँभीर कृपामृत सानी॥

इस आकाशवाणी को जब मनु सतरूपा सुनते हैं तो उनका हृदय प्रफुल्लित हो उठता है और जब स्वयं परमब्रह्म राम प्रकट होते हैं तो उनकी स्तुति करते हुए मनु और सतरूपा कहते हैं- "सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू, बिधि हरि हर बंदित पद रेनू। सेवत सुलभ सकल सुखदायक, प्रणतपाल सचराचर नायक॥" अर्थात् जिनके चरणों की वन्दना विधि, हरि और हर यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों ही करते है, तथा जिनके स्वरूप की प्रशंसा सगुण और निर्गुण दोनों करते हैं[4,5,6]: उनसे वे क्या वर माँगें? इस बात का उल्लेख करके तुलसीदास ने उन लोगों को भी राम की ही आराधना करने की सलाह दी है जो केवल निराकार को ही परमब्रह्म मानते हैं।

श्रीरामचरितमानस में भले रामकथा हो, किन्तु कवि का मूल उद्देश्य राम के चरित्र के माध्यम से नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा देना रहा है। श्रीरामचरितमानस भारतीय संस्कृति का वाहक महाकाव्य ही नहीं अपितु विश्वजनीन आचारशास्त्र का बोधक महान् ग्रन्थ भी है। यह मानव धर्म के सिद्धान्तों के प्रयोगात्मक पक्ष का आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है। यह विभिन्न पुराण निगमागम सम्मत, लोकशास्त्र काव्यावेक्षणजन्य स्वानुभूति पुष्ट प्रातिभ चाक्षुष विषयीकृत जागतिक एवं पारमार्थिक तत्त्वों का सम्यक् निरूपण करता है। गोस्वामी जी ने स्वयं कहा है-

नाना पुराण निगमागम सम्मत यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्योऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ भाषा निबंधमति मंजुलमातनोति ॥

अर्थात यह ग्रन्थ नाना पुराण, निगमागम, रामायण तथा कुछ अन्य ग्रन्थों से लेकर रचा गया है और तुलसी ने अपने अन्तः सुख के लिए रघुनाथ की गाथा कही है।

सामान्य धर्म, विशिष्ट धर्म तथा आपद्धर्म के विभिन्न रूपों की अवतारणा इसकी विशेषता है। पितृधर्म, पुत्रधर्म, मातृधर्म, गुरुधर्म, शिष्यधर्म, भ्रातृधर्म, मित्रधर्म, पतिधर्म, पत्नीधर्म, शत्रुधर्म प्रभृति जागतिक सम्बन्धों के विश्लेषण के साथ ही साथ सेवक-सेव्य, पूजक-पूज्य, एवं आराधक-आर्राध्य के आचरणीय कर्तव्यों का सांगोपांग वर्णन इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। इसीलिए स्त्री-पुरुष आवृद्ध-बाल-युवा निर्धन, धनी, शिक्षित, अशिक्षित, गृहस्थ, संन्यासी सभी इस ग्रन्थ रत्न का आदरपूर्वक परायण करते हैं।

देखिए-

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

इसी प्रकार, राजधर्म पर कहते हैं-

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

वस्तुतः श्रीरामचरितमानस में भक्ति, साहित्य, दर्शन सब कुछ है। तुलसीदास की लोकप्रियता का कारण यह है कि उन्होंने अपनी कविता में अपने देखे हुए जीवन का बहुत गहरा और व्यापक चित्रण किया है।

श्रीरामचरितमानस तुलसीदासजी का सुदृढ़ कीर्ति स्तम्भ है जिसके कारण वे संसार में श्रेष्ठ कवि के रूप में जाने जाते हैं। मानस का कथाशिल्प, काव्यरूप, अलंकार संयोजना, छंद नियोजना और उसका प्रयोगात्मक सौंदर्य, लोक-संस्कृति तथा जीवन-मूल्यों का मनोवैज्ञानिक पक्ष अपने श्रेष्ठतम रूप में है।

विचार-विमर्श

आदर्श मानव कौन है, इसका समाधान उतना ही कठिन है जितना इस प्रश्न का कि आदर्श कर्म क्या है। अथवा आदर्श आचरण किसे कहते हैं। एक परिस्थिति में जो आचरण अधर्म माना जाता है, दूसरी परिस्थिति में वहीं धर्म का रूप ले लेता है। एक काल में जो कर्म गर्हित समझा जाता है, दूसरे काल में वही कर्म पवित्र बन जाता है। एवं एक समाज में जो क्रिया अच्छी समझी जाती है, दूसरे समाज में वही निन्दनीय बन जाती है। इसलिए, महाभारत ने बार-बार दुहराया है, 'सूक्ष्मा गतिर्हि धर्मस्य' अर्थात् धर्म या व्यावहारिक नीति-धर्म की गति बड़ी ही सूक्ष्म होती है; एवं गीता का कथन कि "किं कर्म किमकर्मेति कवयोप्यत्र मोहिताः" कर्म और अकर्म क्या है, इसके निश्चयन में द्रष्टाओं को भी मोह होता है।

यदि रामकथा के इतिहास को देखें तो पता चलेगा कि इस महान चरित्र-विषयक अनुभूति भी बराबर बदलती रही है। भवभूमि[7,8,9] के राम ठीक वे नहीं हैं जो वाल्मीकि के राम हैं और तुलसी के राम वाल्मीकि तथा भवभूति, दोनों के रामों से भिन्न हैं। इसी प्रकार, 'साकेत' के राम पहले के सभी रामों से भिन्न हो गये हैं। वाल्मीकि के राम जब शूद्र-तपस्वी शम्बूक का वध करते हैं तब उनके हृदय में करुणा नहीं उपजती, न इस कृत्य से किसी और को ही क्लेश होता है। उलटे, देवता राम पर पुष्पों की वृष्टि करते हैं और सारा वातावरण इस भाव से भर जाता है कि शम्बूक का वध करके राम ने एक अनिवार्य धर्म का पालन किया है। किन्तु वाल्मीकि से भवभूति की दूरी बहुत अधिक है। इस लम्बी अवधि के बीच, जैन और बौद्ध प्रचारकों ने जनता के मन में यह भाव जगा दिया था कि, हो-न-हो, सभी मनुष्य जन्मना समान हैं और तपस्या यदि सुकर्म है तो वह शूद्रों के लिए वर्जित नहीं समझी जानी चाहिए। परिणाम इसका यह हुआ कि भवभूति जब उत्तर रामचरित में शम्बूक-वध का दृश्य दिखलाने लगे तक उनका हृदय कराह उठा। किन्तु इस करुणा को उन्होंने स्वयं न कहकर राम के ही मुख में डाल दिया। भवभूति के राम जब शम्बूक का वध करना चाहते हैं तब शम्बूक पर उनका हाथ नहीं उठता और वे स्वयं अपनी भुजा को ललकारकर कह उठते हैं

हे हस्त दक्षिण ! मृतस्य शिशोर्द्विजस्य
जीवातवे विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्,
रामस्य गात्रमसि निर्भरगर्भखिन्न-
सीताविवासनपटोः करुणा कुतस्ते ?

(हे मेरे दाहिने हाथ ! तू शूद्र मुनि के ऊपर कृपाण चला, जिससे ब्राह्मण का मृत पुत्र जी उठे। तू तो उस राम का गात्र है जिसने भारी गर्भभार से श्रमित सीता को निर्वासित कर दिया है। मुझमें करुणा कहाँ से आ गई (कि शूद्र मुनि पर तलवार चलाने में हिचकिचा रहा है) ?)

तुलसीदासजी के समय तक आते-आते वृद्ध द्वारा प्रवर्तित बृहत् मानवता का आन्दोलन और भी पुष्ट हो गया एवं नारी और शूद्र के प्रति जनता की भावना कुछ और उदार हो गई। परिणामतः गोस्वामीजी ने 'रामचरितमानस' में शम्बूक-वध एवं सीता-परित्याग की कथाएँ नहीं लिखीं। यदि उन्होंने ये कथाएँ लिखी होतीं तो उनके राम हमारे लिए कहाँ तक ग्राह्य होते, यह संदिग्ध विषय है। इसी प्रकार, 'साकेत' के राम, अनायास ही, उस युग से प्रभावित हो गए हैं जिसके संस्कारों की रचना स्वामी दयानन्द तथा स्वामी विवेकानन्द ने की थी। वेदों का प्रचार और आर्यधर्म का विज्ञापन, यह स्वामी दयानन्द का सबसे प्यारा ध्येय था[10,11,12] एवं स्वामी विवेकानन्द का उपदेश था कि परलोक की आराधना में लोक की उपेक्षा मत करो। 'साकेत' के राम इन दोनों महात्माओं के उद्देश्यों को आगे बढ़ाते हैं:

बहु जन वन में हैं बने ऋक्ष-वानर-से
मैं दूँगा अब आर्यत्व उन्हें निज कर से
उच्चारित होती चले वेद की वाणी,
गूँजे गिरि-कानन, सिन्धु पार कल्याणी।

तथा

सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को स्वर्ग बनाने आया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

इस दृष्टि से देखने पर यह कहना कठिन हो जाता है कि भगवान रामचन्द्र का कौन रूप आदर्श है और कौन नहीं। उनका चरित्र हजारों वर्ष से हमारे राष्ट्रीय जीवन के साथ रहा है और भारतीय आदर्श में समय-समय पर जो परिवर्तन हुए हैं उनकी अनुभूतियाँ रामचरित-विषयक नए काव्यों में समाविष्ट होती आई हैं। यही कारण है कि रामकथा के मूलकाव्य वाल्मीकि-रामायण में राम का जो रूप चित्रित हुआ, 'साकेत' तक आते–आते वह बहुत कुछ परिवर्तित हो गया है। विशेषतः, वाल्मीकि और तुलसी के हाथों जिन दो रामों की सृष्टि हुई, वे परस्पर भिन्न-से लगते हैं। वाल्मीकि के राम मनुष्य हैं एवं मानवोचित दुर्बलताओं की झाँकी उनके चरित्र में स्पष्ट दिखाई देती है। किन्तु तुलसीदासजी ने राम की मानवीय दुर्बलताओं को बिल्कुल नहीं तो, बहुत दूर तक आँखों से ओझल कर दिया है। जैसा गोस्वामीजी का विश्वास था, उनके राम साक्षात् परब्रह्म के अवतार हैं एवं लौकिक आचरण वे केवल लीला के लिए करते हैं। सीता के विरह में ईषत् रुदन, लक्ष्मण की मूर्च्छा के समय क्रन्दन और विलाप तथा जटायु के सामने रावण को लक्ष्य करके कुछ दर्प-प्रदर्शन, ये ही कुछ थोड़ी मानवीय झाँकियाँ हैं जो हें तुलसी के राम में मिलती हैं। बाकी तो वे सदैव मन की उच्च स्थिति में ही विद्यमान मिलते हैं।

यहाँ यह प्रश्न फिर उठता है कि आदर्श मनुष्य कौन है। वह जो रागों से सर्वथा मुक्त होकर देवत्व के सिंहासन पर विराजमान है अथवा वह जो मानवीय दुर्बलताओं का सामना करके बराबर उनसे ऊपर रहने के प्रयास में है ? यदि आदर्श मनुष्य देवता का पर्याय है तो, निश्चय ही इस आदर्श की पूरी झाँकी तुलसी के राम में है। किन्तु मनुष्य का जो संघर्ष[13,14,15] वाला स्वरूप है, उसका आदर्श तुलसी में नहीं, वाल्मीकि के राम में मिलेगा।

मनुष्य का सामान्य लक्षण एक प्रकार का मानसिक संघर्ष है। प्रत्येक मनुष्य के भीतर उच्च और निम्नगामी भावनाओं के बीच द्वन्द्व चला करता है। विकारों का उद्वेग सभी मनुष्यों में उठता है और यह उद्वेग मनुष्यों को नीचे ले जाना चाहता है। ऊँचा अथवा आदर्श मनुष्य वह है जो इन विकारों की अधीनता स्वीकार नहीं करता, प्रत्युत् उन्हें दबाकर अथवा उनका परिष्कार करके अपने आन्तरिक व्यक्तित्व को बराबर उच्च स्थिति में बनाए रखता है। वाल्मिकि ने जिस राम का चरित लिखा है, वे ऐसे ही मनुष्य है। माता और पिता जब राम को वन जाने की आज्ञा देते हैं तब वाल्मीकि और तुलसी, दोनों के अनुसार राम इस आज्ञा को बड़े ही हर्ष से शिरोधार्य कर लेते हैं। यह महापुरुषों का शील है। यह परिवार और समाज की मर्यादा के पालन का दृष्टान्त है। और, सचमुच ही, वाल्मीकि और तुलसी में से दोनों ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया है। किन्तु, प्रश्न रह जाता है कि क्या कैकेयी और दशरथ की इस कठोर आज्ञा के विरुद्ध राम के हृदय में कोई प्रतिक्रिया जगी ही नहीं ? तुलसी का साक्ष्य है कि राम के भीतर कोई आक्रोश नहीं जगा। किन्तु वाल्मीकि कहते हैं कि वनगमन की आज्ञा सुनकर राम को दुख अवश्य हुआ, किन्तु इस दुख को उन्होंने भीतर-ही-भीतर सँभाल लिया। हाँ, वन में जब वे लक्ष्मण के साथ एकान्त में वार्तालाप करते हैं तब उनके मन की शंकाएँ एक-एक करके बाहर निकलने लगती हैं।

क्षुद्रकर्माहि कैकेयी द्वेषादन्याय्यचरेत्।
परिदद्याद्वि धर्मज्ञ ! गरं ते मम मातरम्।

(हे धर्मज्ञ लक्ष्मण ! कैकेयी क्षूद्रकर्मा है। मुझे भय होता है कि कहीं वह तुम्हारी और मेरी माता को जहर न दे दे।)

अर्थधर्मान् परित्यज्य यः काममनुवर्तते।
एवमापद्यते क्षिप्रं राजा दशरथो यथा।

(जो लोग अर्थ और धर्म को छोड़कर केवल नाम का सेवन करते हैं, उनकी वहीं दशा होती है जो राजा दशरथ की हुई) मनुष्य जब तक मनुष्य है तब तक उसके भीतर इस प्रकार की भावनाएँ अवश्य जागेंगी। भेद यह होगा कि सामान्य मनुष्य इन भावनाओं की आधीनता को स्वीकार कर लेगा, किन्तु उच्च मनुष्य उन्हें अपने नियन्त्रण में रखेगा। अयोध्या के राज्य को राम ने तृण से अधिक महत्त्व नहीं दिया, यह बात भी वाल्मीकि और तुलसी, दोनों रामायणों में मिलती है। किन्तु वाल्मीकि यह सन्देश भी दे जाते हैं कि राम के मन में इस त्याग से एक कलक उठी थी। हाँ, उनका चरित्र इतना सुदृढ़ था कि उन्होंने इस कलह को भी दबा दिया।

अधर्मभयभीतश्च परलोकस्य चानध !
तेन लक्ष्मण ! नाद्याहमात्मानमभिषेचये।[16,17]

राम राम रामेति रामे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥
राम राम रामे [अई] ति रामे रामे मनोरमे |
सहस्र-नाम तत्तुल्यं राम-नाम वर- [अ] आने ||

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

अर्थ:
१: "राम राम राम" (राम का नाम)का ध्यान करने से , मेरा मन राम की दिव्य चेतना में लीन हो जाता है, जो पारलौकिक है , २: रामका नाम भगवान के हजार नामों (विष्णु सहस्रनाम) जितना महान है।

भगवान राम का आदर्श जीवन पूरी दुनिया के लिए आज भी प्रासंगिक है। राम का आदर्श चरित्र हमें अपने कर्तव्यों का बोध कराता है कि हम भी उनके जैसा बनें और पुत्र, भाई, पति की तरह अपने कर्तव्यों का पालन करें। हम भक्ति, पूजा, पाठ करें और राज जैसा आचरण न हो तो अपने को कैसे भक्त सकते हैं। भगवान राम पग-पग पर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं लेकिन, हम उनके जैसे बनने का प्रयास नहीं करते। वह राजकुमार होते हुए भी त्याग से पीछे नहीं हटे। एक आदर्श स्थापित किया कि पिता की आज्ञा से बढ़कर कुछ भी नहीं। राम हम सब में हैं। यह गुण हमें पहचानने के साथ आत्मसात करना चाहिए, तभी हम राम के गुण धारण कर उनके जैसा आदर्श जीवन का पालन कर सकते हैं। सामान्य व्यक्ति भी राम की तरह मर्यादा पुरुषोत्तम बन सकता है। राम का मतलब एक आदर्श व्यक्तित्व है। व्यास ने विविध प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन किया।

परिणाम

राम से बड़ा राम का नाम

अंत में निकला ये परिणाम, ये परिणाम,
राम से बड़ा राम का नाम ..

सिमरिये नाम रूप बिनु देखे,
कौड़ी लगे ना दाम .
नाम के बांधे खिंचे आयेंगे,
आखिर एक दिन राम .
राम से बड़ा राम का नाम ..

जिस सागर को बिना सेतु के ,
लांघ सके ना राम .
कूद गये हनुमान उसी को,
लेकर राम का नाम .
राम से बड़ा राम का नाम ..

वो दिलवाले डूब जायेंगे और वो दिलवाले क्या पायेंगे ,
जिनमें नहीं है नाम ..
वो पत्थर भी तैरेंगे जिन पर
लिखा हुआ श्री राम.
राम से बड़ा राम का नाम

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरूपं करुणाकरंतं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये

राम शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है “वह जो रोम रोम में बसे”। यदि हम सामाजिक, ऐतिहासिक आदि रूपों से देखेंगे तब भी यह परिभाषा सर्वथा उपयुक्त बैठती है। इतिहास का कोई पृष्ठ नहीं जहाँ श्री राम का प्रभाव न हो, समाज का कोई वर्ग नहीं जो राम भक्ति से अछूता हो। यह कहना तो कदापि अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री राम भारतीय जनमानस में बसते हैं। यहाँ पिछले सहस्त्रों वर्षों से आजतक जनता यदि किसी आदर्श शासनतंत्र को जानती है तो वो है रामराज्य। यदि कोई जिज्ञासावश जानना चाहे कि रामराज्य के इतने सहस्राब्दियों के बाद भी क्यों सब रामराज्य चाहते हैं तो उत्तर आता है करुणानिधान भगवान श्री राम की महानता।

भगवान श्रीराम की महानता की कोई थाह ही नहीं है, उनके कथा-प्रसंग का श्रवण-पठन कर के आज तक लोग अपने-अपने चरित्र का सुधार करते हैं। उनके अद्वितीय शौर्य एवं पराक्रम से उन्होने यज्ञरक्षा कर ऋषियों को भयहीन किया , उनका अनुपम बल ही खर, दूषण आदि का काल बना, वे ही शील के मूर्त स्वरूप है। धनुष भंग करने का सामर्थ्य होनेपर भी वा सभा मे शांति से बैठे थे और गुरुआज्ञा मिलने पर ही गए, पितृभक्ति ऐसी की पिता का वचन कभी मिथ्या न होने दिए भले स्वयं कष्ट सहे, त्याग ऐसा कि जब

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

कुछ ही समय मे राजतिलक होना था तब भी वल्कल पहनकर वनगमन करने मे संकोच नहीं किया, ज्ञान वेद शास्त्रादि अनेकों ग्रंथों का, मातृभूमि के प्रति प्रेम इतना कि अपनी जन्मभूमि अयोध्या नगरी के बारे मे कभी बुरे शब्द सुनना तक नहीं सहा, धर्म परायण ऐसे जो साधुओं का दुःख सुनकर बोल उठे

"निशिचर हीन करहु महि, भुज उठाए पन कीन्ह।"
अनुजों से स्नेह ऐसा कि युगो तक उनके उदाहरण दिए जाते हैं, सीता माता से ऐसा प्रेम किया आज भी कई लोग सम्बोधन के रूप मे सीताराम ही बोलते हैं, सत्यवादी ऐसे कि 'रामो द्विर्नाभिभाषते' आज प्रेरणा वाक्य है, शबरी को स्वयं नवधा भक्ति का उपदेश देकर सामाजिक सौहार्द के प्रतीक बने, सुग्रीव की कठिन समय मे सहायता कर सच्चे मित्र होने का अर्थ समझाया, घोषणा करके-

"अनुज बधू भगिनि सुत नारी, सुन सठ कन्या सम ए चारि।
इन्हे कुदृष्टि बिलोकि जेई, ताहि बधे कछु पाप न होई॥"
समाज मे नारियों के सम्मान की शिक्षा दी।

राम अपने भक्तों के सामर्थ्य से भली भांति परिचित हैं तभी वह हनुमान को ही मुद्रिका देते हैं, भगवान राम की उदारता ऐसी है कि जो सम्पत्ति रावण [18,19]को दस शीशों के दान के बाद मिली वो सम्पत्ति वो विभीषण को तो उसके आगमन के साथ दे देते है। यह परमपुनीत भगवान का बड़प्पन ही है जो पापियों को भी सुधरने का अवसर देते, रावण के पास भी उन्होने शांतिदूत अंगद को भेजा थे। मातृभक्ति ऐसी की कभी मन मे भी कैकयी माता के प्रति द्वेष भाव न रखा और वापस आ कर सर्वश्रेष्ठ शासक बन कर दिखाए जिनका उदाहरण लोग कई युगो बाद आज भी देते हैं।

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥"
असुरारि भगवान के कर्मों द्वारा स्थापित ऐसे ही आदर्शों ने मानव कल्याण मे भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के संविधान की मूल प्रति मे दीनदयाल भगवान के चित्र हैं। गाँधी जी भी भगवान श्रीराम से ही प्रेरणा पाते थे और भारत मे रामराज्य चाहते थे। स्वामी रामानंद जैसे महान समाज सुधारक संत ने भी समाजिक पतन को रोकने के लिए रामनाम की महिमा का ही प्रयोग किया था । भगवान राम से प्रेरणा पाकर लोग समाजसेवा मे अत्यधिक योगदान करते है। आज भी भगवान राम की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है । हिंदू जनमानस के लिए भगवान राम की प्रासंगिकता उतनी ही ही जितनी सागर में जल की, वनों में वृक्ष की अथवा ज्ञानी पुरुषों में विनम्रता की होती है। राम हर हिंदू के लिए इस भारतवर्ष के पवित्र भूमि के हर कण में व्याप्त है। राम के बिना इस भारतवर्ष की कोई कल्पना नहीं की जा सकती। एक बार श्री राम का नाम-मात्र ही उनके भक्तों के संपूर्ण दुखो का हरण करने वाला है। भगवान राम का चरित्र आज के समय मे भी लोगो को सही दिशा बताने मे सक्षम है । कलिप्रभाव की कालिमा मे तो भगवान राम द्वारा दिखाया धर्मपरायण मार्ग अमावस की रात्रि मे दामिनी समान दमकता है।

भक्तवत्सल भगवान् के अवतार के अनेक कारण होते हैं, भक्तों पर कृपा इनमे प्रमुख हैं। गोस्वामी जी ने लिखा है

"जब जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हि असुर संत अभिमानी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥"
हिंदू शास्त्रों के अनुसार, भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में रावण के अत्याचारों को समाप्त करने और धर्म की पुनः स्थापना के लिए दुनिया में श्री राम के रूप में अवतार लिया। भगवान से साँवले सलोने रूप मे महारानी कौशल्या और महाराज दशरथ के घर अयोध्या मे जन्म लेकर सर्वत्र आनंद का संचार किया ।

भगवान श्रीराम का जन्म परम्परागत रूप चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को माना जाता है। उनके जन्मोत्सव के रूप मे राम नवमी मनाई जाती है। शरणागतवत्सल भगवान के इस पर्व को मनाने का उद्देश्य है धर्म स्वरूप भगवान पुरुषोत्तम राम द्वारा दिखाए गए मार्ग पर आना। आइए आगामी राम नवमी को हम सब मिलकर भगवान श्रीराम का प्राकाट्योत्सव मनाए और उनके चरित्र का गुणगान करें।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को हम नमस्कार करते हैं।

"भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारि"
भारतीय संस्कृति के गौरव के परिचायक सत्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, मैत्री, अनासक्ति, त्याग, उदारता, निष्ठा, मानवता, प्रेम, शांति सद्भाव, परोपकार, लोकसंग्रह आदि अनेक सात्त्विक भावों का रामचरित मानस में संग्रह है, जो हमारी युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

विकास के लिए संजीवनी है। हमारी संस्कृति के इन दिव्य भावों को आत्मसात् करके श्रीराम के उदात्त चरित्र से प्रेरणा लेकर युवा अपने जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए उन पर विजय पाकर स्वयं के लिए तथा सम्पूर्ण समाज के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं तथा वर्तमान में राम-राज्य की स्थापना का स्वप्न साकार कर सकते हैं। बच्चों को जन्म देकर उनका पालन-पोषण करते हुए उनमें संस्कार और सद्गुणों का विकास तो माता पिता और परिजन करते हैं, परन्तु समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्व को सुनिश्चित कर उनमें उच्चतम मानवीय मूल्यों, सद्गुणों और संवेदनाओं का उच्चतम विकास रामायण, रामचरितमानस आदि जैसे शाश्वत ग्रन्थो के स्वाध्याय अथवा अध्ययन, अध्यापन से ही संभव है। इन महनीय ग्रंथों में स्वविवेक, उचित-अनुचित के प्रति सजगता, समाज एवं प्रकृति के प्रति मनुष्य मात्र के दायित्व राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य, स्वामी-सेवक जैसे सम्बन्धों को जैसा दर्शाया गया है, इससे इनकी प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। इसमें यह भी बताया गया है कि अन्याय, अनीति, असत्य एवं पाप इत्यादि दुष्प्रवृतियाँ निश्चित रूप से विनाश को प्राप्त होती हैं तथा न्याय, सत्य, नीति एवं सद्गुणों तथा मानवीय मूल्यों की सदैव विजय होती है। यदि वर्तमान में रामायण आदि ग्रन्थों के कुछ अंशों को भी जीवन में अपनाया जाए तो जीवन श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बन सकता है।

श्रीरामचरितमानस की रचना का उद्देश्य ही मानवता की स्थापना के साथ-साथ मूल्यपरक चिन्तन दृष्टि का विस्तार करना है। आज जब अराजकता की स्थितियाँ क्षण-क्षण निर्मित की जा रही हैं समाज में अनेकों बुराइयाँ चारों तरफ व्याप्त हैं तब रामचरितमानस की ये पंक्तियाँ अति प्रासंगिक लगती हैंः-

परहित सरिस धरम नहिं भाई,

पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई।

'राम' भारतीय संस्कृति के केन्द्रीय तत्व के रूप में स्थापित है, भारत के अतिरिक्त भारत के बाहर भी शताब्दियों से रामकथा का प्रसार रहा है। पूर्वी एशिया के लगभग तीन देशों इंडोनेशिया, कंबोड़िया एवं थाईलैंड में रामायण "राष्ट्रीय काव्यों" के नाम से समाहित है। थाईलैंड की अपनी अयोध्या नगरी है जहां एक मंदिर की भिŸिायों पर अंकित रामकथा, प्रत्येक अनुष्ठान में रामकथा, इंडोनेशिया में बौद्धों एवं मुस्लिमों के विवाह के समय भी रामायण के किसी दृश्य की अनिवार्य प्रस्तुति तथा बर्मा, श्रीलंका, लाओस, मलेशिया, फिलीपीन, मंगोलिया, चीन, जापान, तिब्बत, खोतान आदि देशों की कला, संस्कृति एवं जनजीवन पर रामकथा का गहरा प्रभाव रामकथा के व्यापक महत्व को व्यंजित करता है। राम, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, धर्म, दर्शन, संस्कृति और जनजीवन में मर्यादा स्थापित करने वाले सांस्कृतिक प्रतीक है जिनके माध्यम से युगीन समस्याओं का समाधान एवं चरित्र निर्माण प्रभावी ढंग से किया जाना संभव है। ऐसे राम जो सत्य के मार्ग पर चलने वाले है, अन्याय का दमन करते है, प्रेम और गृहस्थ जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, शबरी और केवट को समाज में बराबरी एवं समता का स्थान प्रदान करते हैं परहित ही जिनका धर्म है। आज के इस अति भौतिकतावादी और यांत्रिक जीवन जीती हुई पीढ़ी को जीवन का वास्तविक दर्शन एवं समतावादी दृष्टिकोण एवं तनाव प्रबंधन का मार्ग खोजने हेतु इसी चरित्र में अवगाहन, अध्ययन एवं मनन करने की महती आवश्यकता है।

साकेत में मैथिलीशरण गुप्त कहते है – ''राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।''
इसीलिए रामायण एवं रामचरितमानस का अध्ययन विविध कारणों से शैक्षणिक पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण है। यह दोनो महाकाव्य साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों के रूप में शास्त्रीय कविता की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित करते हैं। धर्म के दार्शनिक एवं नैतिक आयामों, ईश्वर के प्रति समर्पण की अवधारणा आध्यात्मिकता की गहरी समझ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं जीवन में आस्था को प्रोत्साहित करने हेतु उपयोगी है। अतीत तथा वर्तमान के मध्य सेतु के रूप में कार्य करते हुए विद्यार्थियों को सांस्कृतिक मूलों से संयुक्त करते हैं। अन्रतसांस्कृतिक संवाद, जनसंस्कृति के विश्वासों, धारणाओं, प्रथाओं, संास्कृतिक समझ, जीवन मूल्यों, पीढ़ियों से संचित ज्ञान का प्रसार करते हुए उक्त दोनों राम काव्य विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के बीच भारत की साझी विरासत की समझ को बढ़ावा देते हुए [15,16]उन्हें एक सूत्र में आबद्ध करने में सक्षम हैं।

श्रीराम, राम ऐसे कई नामों से अगणित भक्तों के हृदय में विराजमान रामजी के चरित्र के हर एक पात्र और घटना से पाठकों को कुछ ना कुछ सीख अवश्य मिलती है। रामजी का नाम सुनतेही शरीर में एक पवित्र और भक्तिभाव की ज्वाला प्रज्वलित होती हैं। मन पुलकित हो उठता है। रामचरित हमारे लिए एक अनुकरणीय ग्रंथ है।

कई शतकों से हम रामायण पढते है, सुनते है, परदे पर या रंगमंच पर देखते है लेकिन बार बार दिल रामकथा सुनने या देखने के लिए लालायित होता है। हर बार यह अनुभूति होती है की हम कुछ नया देख रहे है, या सुन रहे है। कई महानुभावों ने रामायण कहानियां लिखी है।

रामायण का आत्मा प्रभु रामचंद्र है लेकिन अन्य पात्र भी हमें बहुत कुछ देते है। वाल्या कोली जो चोर या लुटारु के नाम से जाना

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

जाता था वह रत्नाकर नाम का बालक बचपन से ही गलत संगति के कारण वैसा बना था। लेकिन विधि का लिखा कुछ और था। उसके भाग्य में जो था, उसे वहां तक ले जाने के लिए महर्षि नारदजी स्वयं वहां पहूंच गए। नारदजी के संपर्क में वाल्या या रत्नाकर आया और उसे गुरु मिल गए। सही रास्ता दिखाने वाले गुरु मिलना यह भी एक तकदीर का भाग है। नारदजी मिलने तक रत्नाकर को यह मालूम नहीं था की वह जो कर रहा है वह एक पाप है। भलेही वह अपने कुटुंब के लिए कर रहा था लेकिन जब नारदजी के कहने पर उसने अपने घरवालों से अपने गुनाहों की सजा सहने की बात कही तो उसकी पत्नी ने साफ शब्दों में इन्कार कर दिया और वाल्या की आँखें खुली। नारदजी के कहने पर उसने 'राम' नाम का जाप शुरू किया लेकिन उसके मुंह से 'राम' के बजाए 'मरा' शब्द आने लगा। दो अक्षर कितने साधे थे लेकिन उसमें जो भाव भरा था, वह साधारण नहीं था। ऐसा कहते है कि, मुंह में ईश्वर का नाम आने के लिए भी पास मे कुछ पुण्य होना जरूरी हैं। रत्नाकर के तकदीर का अंबार पाप से भरा हुआ था, तो उसके जबान से भगवान का आयेगा कैसे? उसने नारदजी की ओर देखा तो वे बोले, "रत्नाकर, तुम 'मरा... मरा...' कहते जाओ। जब तुम्हारे पापों का अंत होगा तो अपने आप 'राम.. राम..' नाम आ जाएगा।" कहते हुए महर्षि नारदजी चले गए। गुरु नारदजी ने रत्नाकर को 'मरा' इस शब्द की दीक्षा दी थी। कुछ सालों बाद नारदजी उसी रास्ते से गुजर रहें थे तो उनके कानों पर 'राम... राम...' नाम की धून पडने लगी। नारदजी को आश्चर्य हुआ की, इतने घने जंगल में कौन राम नाम ले रहा है? वे जैसे जैसे उस आवाज की ओर जा रहे थे, तो आवाजें बढने लगी, ऐसा लग रहा था, मानो उस परिसर के पेड, पन्ने, फुल और साथही बडें बडें पत्थर भी आत्मियता से, भक्ति से राम नाम ले रहें थे। नारदजी के मन मे यह सवाल उठ रहा था कि, आखिर बात क्या है, यह जाप कौन कर रहा है? अचानक उन्हें याद आया, 'अरे, यह तो रत्नाकर है, जिसे बरसों पहले मैने राम नाम का जाप करने को कहा था...।' कहते हुए नारदजी ने देखा कि, एक बडे वारुल से यह आवाज आ रही है। उन्होंने तत्काल उस वारुल को खोदना शुरू किया। अंदर रत्नाकर समाधि अवस्था में बैठा था। उसे कोई जानकारी नही थी, वह सबकुछ भुल कर केवल राम नाम मे लीन था। ऐसे समाधिस्थ व्यक्ती को समाधि अवस्था से बाहर निकालने कि एक कला, एक मंत्र होता है। नारदजी रत्नाकर के सिर पर हाथ फेरने लगे और कुछ ही क्षणों मे रत्नाकर की समाधि भंग हुई। नारदजी ने देखा रत्नाकर के शरीर में मानों खुन की एक बुंद भी नही थी, शरीर अस्थिपंजर हुआ था। रत्नाकर ने देखा, सामने नारदजी खडे है, उसके खुशी का कोई ठिकाना नही था। हर्षोल्लास से भरे रत्नाकर को नारदजी ने उठाते हुए कहा, "उठो, महर्षि वाल्मीकि, उठो। आपने सालोंसाल जो जाप किया है, उससे आपके सारे पाप नष्ट हो गए है। महर्षि आप को एक महान काम करना है.... रामायण लिखनी है....।" रत्नाकर ने नारदजी के पांव पकड लिए और कहा, "गुरुवर, आप की आज्ञा सर आंखों पर। आप जो कहे, जैसा कहे मै करने के लिए तैयार हूं।" आगे चल कर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण जैसा अद्‌भुत, पवित्र ग्रंथ लिखा। खास बात यह थी कि, महर्षि वाल्मीकि ने जो लिखा वैसे ही भविष्य में हुआ। यह राम नाम लेनी की महती थी, जो वाल्या एक चोर, डाकू का काम करता था वही वाल्या केवल अखंड राम नाम लेने के कारण महर्षि वाल्मीकि बन गया। पापमुक्ति के लिए के लिए दूसरी कौनसी कारगर दवाई नही है। संत पद तक पहुंचने के लिए अखंडता से राम नाम लेना पडता हैं। गुरु नारदजी ने अपना काम बखुबी निभाया, भटके को सही रास्ते पर लाना। गुरु कोई भी हो अपने शिष्यों को सही रास्ता बताता है। उसे पाप करने से रोकता है।

सीता को रावण ने अशोक वन मे रखा था, तो हनुमानजी ने सीतामाता का पता लगा लिया। उसके बाद रामजीने लंकापर आक्रमण किया। घनघोर युद्ध हुआ। रावण के एक- एक धुरंधर, पराक्रमी योद्धाओं को राम- लक्ष्मण और उनके साथियों ने परास्त किया तो आखिर स्वयं रावण को युद्धभूमि पर आना पडा। जब युद्ध चल रहा था तो रावण ने लक्ष्मण को एक शक्ति से बेहोश किया। यह देखकर श्रीराम स्वयं रावण को ललकारते हुए सामने आ खडे हुए। रामजीने रावण की सेना पर बाणों की बौछार कर दी। उन बाणों की मार से कोटि से ज्यादा दानव, हाथी, घोड़े रणभूमि पर गिर गए। एक समय ऐसा आया कि, रावण सबकुछ भुलाकर खुद राम का पराक्रम देखने लगा। कुछ पल बाद तो रावण को समरभूमि पर जहां वहां केवल राम दिखने लगे। वह जिधर देखता वहां खडे दानव, हाथी, घोडों की जगह प्रभु रामचंद्र दिखने लगे। निर्जीव वस्तु रथ, ध्वज, सारथि यह सब मे उसे राम ही दिखाई पडने लगे। आश्चर्य की बात यह थी की, उसे लगने लगा, उसके हृदय में भी राम ने निवास कर लिया है। ऐसा क्यों हुआ, क्योंकि वह पिछले कई महिनों या सालोंसे दुश्मन का नाम 'राम' लेते समय अनजाने मे शायद जाप कर रहा था। इस अद्‌भुत शक्ति से घबराकर रावण रथ से उतर कर भागने लगा। कुछ दूर जाकर उसने पीछे मुडकर देखा तो उसके पीछे भागते हुए जो दानव आ रहे थे, वे भी उसे रामस्वरूप दिखने लगे। रावण ने राम को पराजित करनेके लिए कुंभकर्ण जो गहरी निद्रा में सोया हुआ था उसे जगाया। जब कुंभकर्ण रावण के पास आया और उसने पूछा, "आपने सीता को बंदी बनाकर रखा तो है, लेकिन जो मंशा से उसे यहां लाएं थे, वह पूरी हुई या नहीं?"कुंभकर्ण के ऐसे सवाल पर रावण ने जो उत्तर दिया वह श्रीरामजी और सीतामाता का ईश्वर रुप प्रकट करता हैं और रामजी का महिलाओं के प्रति जो पवित्र रिश्तों का रवैया था वह भी सिद्ध होता हैं। रावण कहता है, "कुंभकर्ण, सीता कोई सामान्य स्त्री नही है। वह बडी पतिव्रता है। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन मैं विफल रहा।" "तो फिर कपटजाल से राम का रुप लेकर सीता को फंसाया क्यों नही?" "नहीं, कुंभकर्ण, नही। जब भी मै राम का रुप धारण करुंगा तभी दिल से वासना, परस्त्री को भोगने की लालसा पल भर में नष्ट हो जाएगी। जैसे राम परस्त्री को माता मानता है, वैसी भावना मेरे मन मे भी जाग उठेगी। मै भी राम की तरह एकपत्नी, एकवचनी हो जाउंगा।"

निश्चित रूप से श्रीराम के अच्छे गुणों का डर रावण को सता रहा था। आज सास-बहू, ननंद-भाभी की बातें छोड़ो लेकिन दो बहनें हो, मां- बेटियों में भी नहीं बनती। लेकिन कोसल्या, कैकयी और सुमित्रा तीनों सौतन थी पर उनमें बहनों जैसा प्यार था। तीनों का दुख एक था कि तीनों को संतान नहीं थी। तीनों मे द्वेष, झगड़ा नहीं होता था। तीनों में प्यार था। तीनों में जो अच्छे संबंध थे, यह अनुकरणीय उदाहरण है। भाई- भाईयों मे जो प्यार होता है, कर्त्तव्य होता है उसका अनोखा प्रमाण हमें रामजी और उनके भाईयों मे

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

दिखता है। जब बात राम को वन में जाने की आती है तो लक्ष्मण बडे भाई की सेवा अपना कर्तव्य मानकर वन में जाने की जिद करता है, यह कहकर की, अरण्य मे आपकी सेवा करनेवाला कोई नहीं होगा। मैं साथ मे रहूंगा तो आपकी सारी बातों का ध्यान रखुंगा। आपकी सेवा करनेसे मुझे परमानंद मिलेगा। इतनाही नही, लक्ष्मण अपनी पत्नी को समझाते हुए उसे छोड़कर वन मे चला जाता हैं। यहां लक्ष्मण का बडे भाई रामजी के लिए अपना प्यार, कर्तव्य, सेवाभाव दिखाई देता हैं जो आज बहुत कम परिवारों में मिलता हैं।[19,20]

जब बात लक्ष्मण की आती हैं तो हमें उनकी पत्नी उर्मिला की स्थिति जाननी चाहिए। उर्मिला भी राजा जनक की कन्या, राजपुत्री थी। अयोध्या नरेश की बहु थी। जब लक्ष्मण अपने भाई के साथ वन में जाने का निर्णय उर्मिला को केवल बताता है और उसे मानो आज्ञा देते हुए कहता है कि, आपको यहां अयोध्या रहकर हमारी तीनों माँ, पिताजी और भाईयों की देखभाल या सेवा करनी है।साथ में यह भी कहता है कि, अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए आँखों में आँसू नहीं आने चाहिए। क्योंकि आँसू कर्तव्य से दूर करते है। ऐसी बातें सुनकर उर्मिला की स्थिति कैसी हुई होगी? एक नई ब्याहता के लिए पति का वियोग केवल कुछ दिन का नही था बल्कि चौदह साल का था लेकिन दुख के पर्वत सहते हुए उर्मिला ने अपने कर्तव्यों का पालन दृढतापूर्वक किया जो अलौकिक है, आदर्श है।
भरत! कैकयी पुत्र! जब भरत को सिंहासन पर बिठाने के लिए माता कैकयी ने श्रीराम को वनवास भेजा यह भरत जानता है तो वह बहुत क्रोधित होता है। कैकयी को खरीखोटी सुनाता है, उसपर गुस्सा करता है। इसके पीछे मंथरा का हाथ है यह समझते ही उसे मारने दौडता है। साथही फौरन अरण्य में जाकर रामजी से प्रार्थना करता है कि उसे राज सिंहासन नही चाहिए। रामजी, वापस चले और राजगद्दी संभालें। लेकिन जब रामजी दृढतापूर्वक अयोध्या आने से इन्कार करते हैं तो रामजी की पादुका लेकर लौटकर अयोध्या आनेवाला भरत सिंहासन पर वह पादुका रखते हुए अयोध्या का राज्य चलाता है। बिना माँगे जिसे अयोध्या जैसे राज्य का सिंहासन मिलता है वह राजकुमार भरत उसे नकारता है। यह केवल भाई का प्यार नहीं है, यह बडे भाई के होते हुए छोटा सिंहासन पर नही बैठ सकता यह राजशिष्टाचार भी है। जिसे निभाने की भरत भरकस कोशिश करता है।
शत्रुघ्न! रामजी का छोटा भाई। वह तो कही ज्यादा सामने नहीं आता। वह भी राजकुमार था। उसकी भी कोई आशा-अपेक्षाएं होगी लेकिन जैसे बडे पेड के नीचे उगनेवाले छोटे पौधे की ओर कोई ध्यान नही देता वैसे कुछ शत्रुघ्न के साथ होता है। फिर भी वह खामोश रहता है, जो भी काम या जिम्मेदारी मिले उसे अपना कर्तव्य समझकर अच्छी तरह निभाता है।
नसीब, तकदीर कैसी होती है, यह बात रामायण कथा में बार बार सामने आती हैं। संतान प्राप्ति के लिए राजा दशरथ ने यज्ञ किया। जिसके प्रसाद से तीनों रानियों को संतान हुई लेकिन एक काली चील ने कैकयी के हाथों से प्रसाद छीन कर हजारों सालों से घोर तपस्या करने वाली अंजनी माता के हाथों में डाल दिया और चिरंजीवी हनुमान जी का जन्म हुआ। वह चील भी एक शापित नर्तकी थी। अंजनी के हाथों में प्रसाद डालते ही वह शाप मुक्त हो गई। यज्ञ किया था दशरथ जी ने लेकिन तीनों रानियों के साथ चील और अंजनी का उद्धार हो गया। कभी कभी ऐसा भी होता है जब कोई अच्छा काम करता है तो उसका फल उसके साथ अन्य को भी मिलता है।

मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है। हम सब नियति के अधीन होते हैं। कोई कितनी भी बड़ी बड़ी बाते करें लेकिन वही होता है जो मंजुरे खुदा होता है। यह बात तब समझ में आती है, जब ऋषि विश्वामित्र स्वयं एक बड़े, महापराक्रमी योद्धा होकर भी यज्ञ में बाधा पहुंचाने वाले दानवों को मारने के लिए श्रीराम जैसे बालक का चयन करते हैं।
राक्षस मारिच, अहिल्या, गुहक, शुर्पणखा, जटायु, शबरी, वाली, सुग्रीव, मंदोदरी, बिभीषन, चंद्रसेना, जैसे पात्र हमें रामकथा में मिलते है, उसमे कोई शापमुक्ति के लिए राम की राह देखता है। कोई रावण को दुष्कर्म करने से परावृत्त करने की कोशिश करता हैं लेकिन रावण सब बातें अनसुनी करता हैं।

गर्व, गुंडागर्दी, अकड़न जैसी बातोंसे किसी का कोई फायदा नहीं होता बल्कि भारी नुकसान होता है। रावण बड़ा शिवभक्त था, महापराक्रमी वीर था। शायद यह बातें उसे भ्रमित करती थी, क्योंकि जब सीता स्वयंवर हो रहा था तब राजा जनक ने रावण को आमंत्रित नही किया था। फिर भी रावण सीता जैसी सौंदर्यवान महिला अपने शयनकक्ष में होनी चाहिये इस लालसा से स्वयंवर में पहुंच गया लेकिन जो वह चाहता वह उसके नसीब में नहीं था। इसलिए बलशाली होकर भी वह वो धनुष नही उठा पाया और उसे अपमानित होना पडा। शक्ति से अधिक, या लालसा के अंकित होकर कोई कार्य करने की कोशिश करते समय अपमान झेलना पडता है यह एक बडी सीख हम रावण की इस घटना से ले सकते है जो बहुत फायदेमंद है।
रामजी के चरित्र से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता हैं। विकल्प, संशय बसा बसाया घर उजाड़ने के लिए कारणीभूत होते है। कई संसार उद्ध्वस्त होते है। भाई-भाई, माँ- बेटा, पति-पत्नी ऐसे रिश्तों में दरारें पड़ती हैं। मंथरा जैसी एक दासी ने कैकयी के मन मे जो संशय बोया था, उस वजह से दशरथजी का पूरा परिवार बिखर गया। साथही कुछ बातें हमारे करनी के विपरीत होती हैं, तब तत्कालीन परिस्थितियां कारगर साबित होती हैं।

रामगोष्टी में बहुत सारे संदेश समाये हुए है। सीता देवी राजा जनक की बेटी, राजकुमारी! श्रीराम की पत्नी, अयोध्या की रानी होते हुए भी जब पति वनवास जाने को तैयार हो रहे थे और सीतामाता को अयोध्या रह कर माताओं का खयाल रखने को कह रहे थे, तो सीताजी ने विनम्रता से उसे नकारते हुए पति के साथ अरण्य में जाने की जिद की। वह कहने लगी, "पति की सेवा यही पत्नी का धर्म होता है। जहां पति जाएगा, पत्नी को भी वहीं जाना चाहिए। पति महलों में रहे झोपड़ी मे रहे या घने

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

जंगल में रहे, वहां पत्नी को साथ जाकर पति की सेवा करनी चाहिए, इसी मे उसे बडा आनंद और समाधान मिलता है।" सीता की बातें सुनकर रामजी को सीता समेत लक्ष्मण को साथ लेकर वनवास मे जाना पडा। जब रावण सीता का अपहरण करता है तो सीता उसे वश नही होती। जब रामजी रावण का वध करते हैं और हनुमानजी सीता को लेकर रामजी के पास आते हैं तो प्रभु श्रीराम उन्हें अग्नि परीक्षा देने को कहते है। पति आज्ञा प्रमाण मानते हुए सीता वह अग्नि परीक्षा से सफलतापूर्वक गुजरती हैं। ऐसे कई प्रसंग है, जो केवल देखने या सुनने के साथ अनुकरणीय है। आज समाज में जो दुष्कर्म, स्वैराचार बढ रहा है उसे रोकना है तो रामकथा आदर्श है। अनेक संकटों से मुक्त होने का एकही मार्ग है... राम नाम! ।। जय श्रीराम।।

निष्कर्ष

कहा जाता है कि भारत पर्वों का देश है। यहां की दिनचर्या में ही पर्व-त्यौहार बसे हुए हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति को दुनिया भर में बहुत महत्व दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति धर्मपरायण संस्कृति जो है, जहाँ प्रत्येक त्यौहार अपनी विशेषता लिए हुए है। उन्हीं विशेष त्यौहारों में एक त्यौहार है जो नवरात्रि के दिनों में मनाया जाता है, वो है....रामनवमी ।

रामनवमी अर्थात भगवान श्रीराम का जन्मदिन...राम जन्म के कारण ही हिन्दू धर्म में चैत्र मास का महत्व बहुत बढ़ जाता है, साथ ही हमारे लिए यह दिन पुण्य पर्व से कम नहीं होता, श्रीराम को उत्तर से लेकर दक्षिण तक संपूर्ण जनमानस ने भगवान रूप में स्वीकार किया गया है। उत्तर भारत में तो चैत्र माह में रामचरितमानस के पारायण की पुरानी परम्परा है। वाल्मिकी रामायण में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है ओर तो ओर तुलसीदासजी ने अपने आधार ग्रन्थ रामचरित मानस में भगवान राम के जीवन का वर्णन करते हुए बताया है कि भगवान विष्णु ने असुरों का संहार करने के लिए राम रूप में पृथ्वी पर अवतार लिया और जीवन में मर्यादा का पालन करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। तभी से लेकर आज तक मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है, इस दिन स्नान ध्यान पूजन भोज दान व्रत आदि किए जाते है। इस दिन यह सभी धर्मिक कर्मकाण्ड यहीं सोचकर किए जाते है कि राम की तरह ही हम भी अपने जीवनकाल में आदर्श प्रस्तुत करें।

कहा जाता है कि जब भगवान अवतरित होते हैं, तो वे जन्म ही ऐसे समय लेते है जब ग्रह-नक्षत्र की स्थिति शुभ होती है। श्रीराम ने भी ऐसे ही समय में जन्म लिया, जब ग्रह की स्थिति सुन्दर थी व ऋतु एवं समय सुहावना था। वाल्मिकी रामायण में श्रीराम के जन्मदिन का विवरण इस प्रकार है-

तत यज्ञेतु ऋतुनां षट् समत्ययुय। ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ।।
अर्थात यज्ञ समाप्ति के पश्चात जब छह ऋतुएं बीत गई, तब बारहवें मास में चैत्र शुक्ल नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र स्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम जन्म का मनोहारी वर्णन इस प्रकार किया है-

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

नवमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्य दिवस अति सीत न धामा। पावन काल लोक बिश्रामा।।
भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम के व्यक्तित्व से भारतीय जनता भलिभाँति परिचित है। राम का नाम सुनते ही हमारे मानसपटल पर एक मर्यादा पुरूषोत्तम व्यक्ति की छवि अंकित होती है। श्रीराम का चरित्र आदर्शवादी है, जिनसे संसार का प्रत्येक व्यक्ति प्रेरणा लेता है। त्रेतायुग में भगवान श्रीराम से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं, उनसे उत्तम कोई व्रत नहीं, कोई श्रेष्ठ योग नहीं, कोई उत्कृष्ट अनुष्ठान नहीं। राम ने अपने जीवन काल में अपनी प्रत्येक भूमिका का निर्वाह श्रेष्ठतापूर्वक किया- गुरु सेवा, शरणागत की रक्षा, जाति-पाँति का भेद मिटाना हो या भ्रातृ-प्रेम, मातृ-पितृ भक्ति, एक पत्नी व्रत, भक्त वत्सलता, कर्तव्यनिष्ठता, आदि चरित्र के महान रूप हमारे समक्ष राम ने प्रस्तुत किए। अयोध्या के राजकुमार होते हुए भी राम अपने पिता के वचनों को पूरा करने के लिए संपूर्ण वैभव को त्याग कर चैदह वर्षों के लिए वन चले गए। उन्होंने अपने जीवन में धर्म की रक्षा करते हुए अपने हर वचन को पूर्ण किया। उनके महान चरित्र की उच्च वृत्तियाँ जनमानस को शांति और आनंद का आभास कराती है। संपूर्ण भारतीय समाज के जरिए एक समान आदर्श के रूप में उनका तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वरूप भारत की एकता का प्रत्यक्ष चित्र उपस्थित करता है।

आदिकवि ने उनके संबंध में लिखा है कि वे गाम्भीर्य में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं। राम के चरित्र में पग-पग पर मर्यादा, त्याग, प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं। राम ने साक्षात परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया। उनका पवित्र चरित्र लोकतंत्र का प्रहरी, उत्प्रेरक और निर्माता भी है। इसीलिए तो भगवान राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव है और युगों-युगों तक रहेगा। संसार की प्रत्येक माता अपने पुत्र में राम को देखना चाहती है।

कुलमिलाकर देखें तो वर्तमान संदर्भों में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों का जनमानस पर गहरा प्रभाव तो है। परंतु उनके आदर्शों को जीवन में नहीं उतारा जाता। हम सभी रामनवमी और जन्माष्टमी तो उल्लासपूर्वक मनाते हैं पर उनके कर्म व संदेश को नहीं अपनाते। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता ज्ञान आज सिर्फ एक ग्रंथ बनकर रह गया है।
मानती हूं कि भगवान राम आदर्श व्यक्तित्व के प्रतीक हैं। उन्होंने भ्रष्ट, अराजक और पतित समाज में भी धर्म, आचरण, शील और मर्यादाओं की पुनर्स्थापना का काम किया। भले भारी कीमत चुकानी पड़ी हो पर उन्होंने देश और समाज को सबल व उन्नत बनाने के लिए हर नियम का पालन किया। परिदृश्य अतीत का हो या वर्तमान का, जनमानस ने रामजी के आदर्शों को खूब समझा-परखा है लेकिन साथ ही भगवान राम की प्रासंगिकता को संक्रमित करने का काम भी किया है। परिस्थिति यह है कि महापुरुषों के आदर्श सिर्फ टीवी धारावाहिकों और किताबों तक सिमट कर रह गए हैं। नेताओं ने भी सत्ता हासिल करने के लिए श्रीराम नाम का सहारा लेकर धर्म की आड़ में वोट बटोरे पर राम के गुणों को अपनाया नहीं। प्रजा का सच्चा जनसेवक राम जैसा आदर्श सद्चरित्र आज के युग में दुर्लभ है। हमारे जनप्रतिनिधि जनसेवा की बजाए स्वसेवा में ज्यादा विश्वास करते हैं। आज एक तरफ हमारे चरित्र, संबंधों, व्यवहार से लेकर समाज और राजनीति तक सभी जगह मर्यादाएं तार-तार हो रही हैं... और दूसरी तरफ हम रामनवमी भी मनाते हैं। क्या कहें ? रामजी का पूरा जीवन आदर्शों, संघर्षों से भरा पड़ा है उसे अगर सामान्यजन अपना ले तो उसका जीवन स्वर्ग बन जाए।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

लेकिन जनमानस तो सिर्फ रामजी की पूजा में व्यस्त है, यहाँ तक की हिंसा से भी उसे परहेज नहीं है। राम सिर्फ एक आदर्श पुत्र ही नहीं ,आदर्श पति और भाई भी थे। आज न तो कोई आदर्श पति है और न ही आदर्श पुत्र या भाई है। श्रीराम प्रातः अपने माता-पिता के चरण स्पर्श करते थे जबकि आज चरण स्पर्श तो दूर बच्चे माता-पिता की बात तक नहीं मानते।

हमारी अधिकतर समस्याएं असंतुलन से उत्पन्न हुई हैं। ऐसे में हमारे सनातन धर्म की यह देन है कि वह हमें अपने व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक आचरण में संतुलन लाने का मार्ग सुझाता है। किसी भी चीज की अति ठीक नहीं होती। हमें स्वतंत्रता है अपना जीवन अपनी मर्जी से जीने का लेकिन यह स्वतंत्रता अराजकता लाने वाली नहीं होनी चाहिए जिसमें किसी नियम की, कानून की कोई कद्र ही न हो। हमारे भारत में भी आज कई लोग पश्चिम की संस्कृति को ज्यादा सुविधाजनक मानते हैं और खुद भी वैसा ही बनने का प्रयास करते नजर आते हैं।

मैं खुद भी पश्चिम विरोधी कतई नहीं हूं और ऐसी कई अच्छी बातें हैं जो हम उनसे सीख सकते हैं। लेकिन मैं यह भी मानती हूं कि ऐसा बहुत कुछ है जो हम अपने भगवानों और पूर्वजों सेभी सीख सकते हैं। जैसे उदाहरण के तौर पर, हम भगवान राम से यह सीख सकते हैं कि कैसे सहजता के साथ नियमों-कानूनों का पालन किया जाए, जिससे हमारे समाज और देश का उत्थान हो। यहां मन में प्रष्न उठना स्वाभाविक है कि युवाओं के जीवन में आगे बढ़ने में राम की क्या भूमिका हो सकती है? तो जवाब यह है कि भगवान राम हमें प्रगति का मूल्य और उसे प्राप्त करने का सही रास्ता दिखाते हैं। भगवान राम की कथा कई प्रकार से कही गई है। इनमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय संत तुलसीदास की रामचरितमानस है। लेकिन और भी रामायण हैं जैसे अद्भूत रामायण, जिसमें अंत में सीता माता को

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है। और फिर तमिल की कम्ब रामायण है जिसमें राम नायक तो हैं, लेकिन रावण को उतना बुरा राक्षस नहीं दिखाया गया है। श्उत्तररामचरितश् में भगवान राम और मां सीता अंत में फिर से मिल जाते हैं और खुशहाल जीवन बिताते हैं। इसके अलावा वाल्मीकि रामायण है जिसे मूल रामायण माना जाता है। लेकिन इन सभी में भगवान राम को हम सदैव नियम-कानून का पालन करने वाला पाते हैं, भले इसके लिए उनको भारी कीमत ही क्यों न चुकानी पड़ी हो। यह हम सभी के लिए भगवान राम की बहुमूल्य सीख है। हमें सदैव देश के कानून का पालन करना ही चाहिए।

इस बात के तारतम्य में यदि यह सोचा जाए कि जो जमाना राम का था, वह युग अब नहीं रहा। फिर ऐसी क्या बात है जो उन्हें आज भी इतना प्रासंगिक और जरूरी बनाती है? प्राचीन हिन्दू मान्यताओं के अनुसार एक भक्त को सभी भगवानों की पूजा करनी चाहिए क्योंकि वे सृष्टि की उसी एक चेतना को अलग-अलग रूपों में व्यक्त करते हैं। अब जैसे ऋग्वेद में कहा गया है कि एकम् सद् विप्ररू बहुधा वदन्ति।
दरअसल हमारे सभी देवता पूरे ब्रह्मांड को संचालित करने वाली अनन्त ऊर्जा के भिन्न-भिन्न स्वरूपों की अभिव्यक्ति हैं, इसलिए हम उनसे अपने को सुधारने और फिर अपने ही भीतर ईश्वर को खोजने का रास्ता तलाशने का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। भगवान राम ऐसा करने में हमारी बहुत मदद करते हैं। हालांकि कुछ लोग भगवान राम का विरोध भी करते हैं। कोई उन्हें स्त्री-विरोधी बताता है,तो कोई अपने परिवार के प्रति अत्याचारी बताकर काफी कड़ी टिप्पणी करतें है। जहां तक मैं समझती हूं, वह कोई श्अतिवादी धर्मनिरपेक्षश् नहीं होते। ये वे लोग होते हैं जो धर्म से दूरी बनाकर रहते हैं, खासकर अपने धर्म से। और स्वयं को धार्मिक और स्वतंत्र विचारों का मानते है। उसी बात का हवाला देते हुएसवाल उठाते है कि राम के प्रति भगवान जैसे आदर सूचक शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है। तर्क देते है कि जो अपने परिवार की महिलाओं का सम्मान करता है। वो राम का सम्मान कैसे कर सकता है जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ इतना बुरा बर्ताव किया। उसके बाद भगवान के बारे कड़ी टिप्पणियां करते है जिनसे क्षुब्धता आती है। दुरूख की बात है कि खुले विचारों के नाम पर भगवान राम की आलेचना करने का फैशन सा बन गया है।

हिन्दू धर्म में मन में आई शंकाएं या प्रश्न पूछने को हमेशा प्रोत्साहित किया गया है, इसीलिए हम पूरे निश्चय के साथ कह सकते हैं-राम केवल एक व्यक्तित्व नहीं जिसका विरोध किया जाए वह तो एक विचारधारा है जो सभी में प्रवाहमान है, अंतर बस यह है कि कोई उस से भिज्ञ है तो कोई अनभिज्ञ। आज व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और पूरी दुनिया के सामने जो खतरे हैं, उनको हम तभी टाल सकते हैं, जब एक बार फिर से मर्यादाओं और नियमों की पुनर्स्थापना हो, राम ने खुद मर्यादा का पालन करते हुए स्वयं को तकलीफ और दुःख देते हुए प्रजा को सुखी रखा क्योंकि उनके लिए जनसेवा सर्वोपरि थी।

राम जैसे आदर्श और मर्यादा यदि हममें होती तो आज स्त्रियों को ऐसी भयावहता से नहीं गुजरना पड़ता। राम के चरित्र को केवल एक प्रतिशत ही हमारे देश के नागरिक अपने जीवन में आत्मसात कर लें तो हम आज विश्व मंच पर सुशोभित हो जाएँगे। राम के आदर्श लक्ष्मण रेखा की उस मर्यादा के समान है जो लाँघी तो अनर्थ ही अनर्थ और सीमा की मर्यादा में रहे तो खुशहाल और सुरक्षित जीवन। जो व्यक्ति संयमित, मर्यादित और संस्कारित जीवन जीता है, निःस्वार्थ भाव से उसी में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों की झलक परिलक्षित हो सकती है। जय श्रीराम।[20]

संदर्भ

1. रामचरितमानस - बालकाण्ड (१-५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
2. रामचरितमानस - बालकाण्ड (५१-१००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
3. रामचरितमानस - बालकाण्ड (१०१-१५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
4. रामचरितमानस - बालकाण्ड (१५१-२००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
5. रामचरितमानस - बालकाण्ड (२०१-२५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
6. रामचरितमानस - बालकाण्ड (२५१-३००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
7. रामचरितमानस - बालकाण्ड (३०१-३५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
8. रामचरितमानस - बालकाण्ड (३५१-३६१) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
9. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (१-५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
10. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (५१-१००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
11. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (१०१-१५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
12. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (१५१-२००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
13. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (२०१-२५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
14. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (२५१-३००) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
15. रामचरितमानस - अयोध्याकाण्ड (३०१-३२६) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
16. रामचरितमानस - अरण्यकाण्ड (१-४६) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

17. रामचरितमानस - किष्किन्धाकाण्ड (१-३०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
18. रामचरितमानस - सुन्दरकाण्ड (१-५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
19. रामचरितमानस - सुन्दरकाण्ड (५१-६०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)
20. रामचरितमानस - लंकाकाण्ड (१-५०) का मूल पाठ (विकीस्रोत पर)

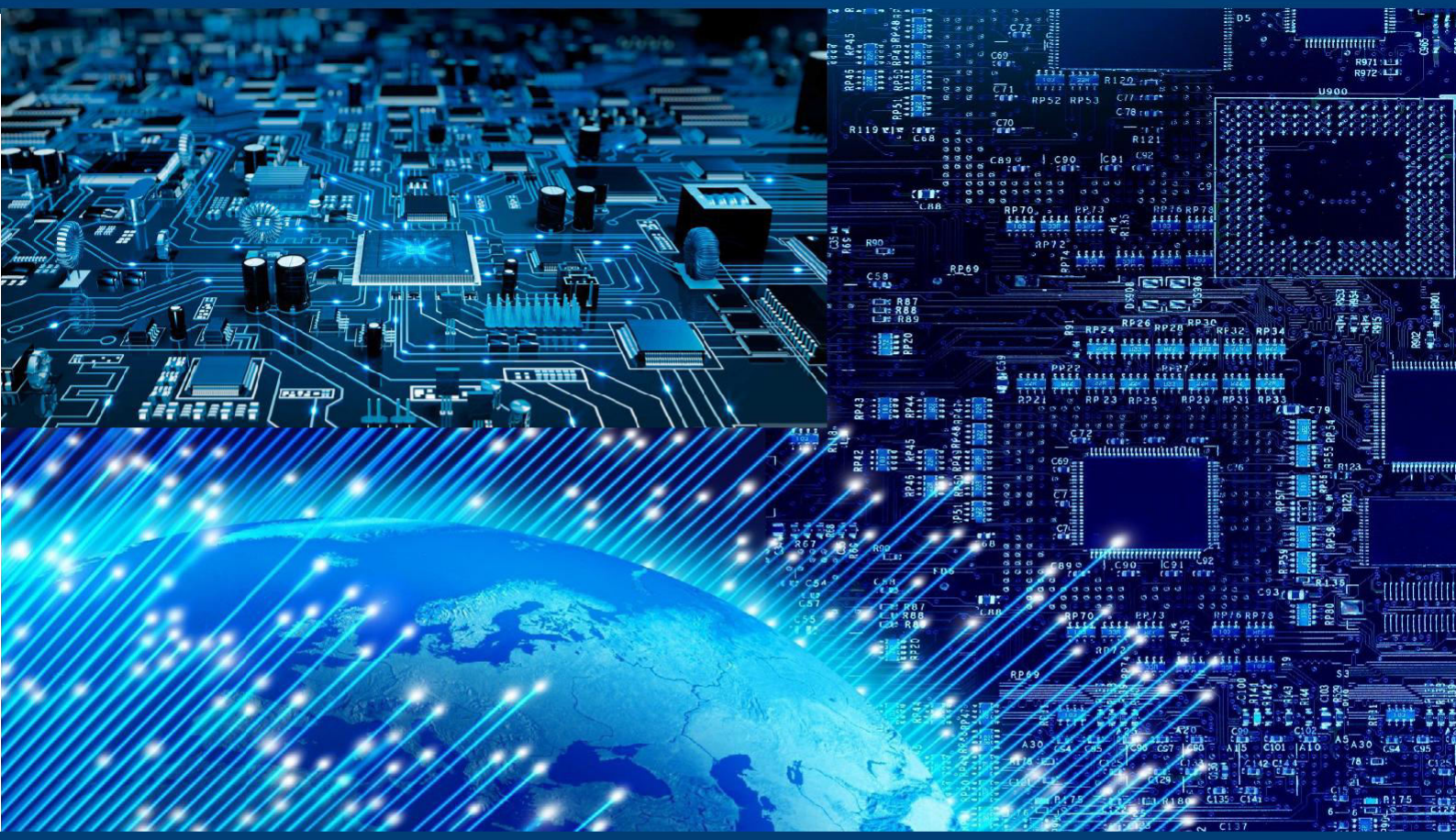

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |